तापमान
26.2° अधिकतम | 15.9° न्यूनतम

शुभम संदेश

एक राज्य - एक अखबार

गुरुवार 29 फरवरी 2024 ● फाल्गुन कृष्ण पक्ष 05 , संवत 2080 ● पृष्ठ : 12, मूल्य : ₹ ~~8~~ ● वर्ष : 1, अंक : 312 आमंत्रण मूल्य : ₹ 3 मात्र

रांची गौशाला न्यास समिति की आम सभा

जमीन के लेकर सवालों की बौछार पदाधिकारी देते रहे **सफाई**

बाढ़ू, बुकरू स्थित गौशाला की जमीन बेचने का मामला गरमाया रहा

नोंक-झोंक, गहमा-गहमी

जमीन के दो और दावेदार भी आये सामने, कहा-जमीन खरीदने का पहला हक हमारा

रांची गौशाला न्यास समिति की आमसभा को संबोधित करते पदाधिकारी और सभा में मौजूद सदस्यगण. आमसभा के दौरान सदस्यों ने कई सवाल उठाये, कई बार तीखी नोंक-झोंक हुई और माहौल भी गरमाता रहा.

राजन बॉबी। रांची । गौशाला न्यास समिति की आम सभा में बाढ़ू, बुकरू स्थित गौशाला की जमीन बेचने का मामला गरमाया रहा. सभा की औपचारिकता पूरी करने और आय-व्यय का ब्योरा प्रस्तुत करने के बाद जैसे ही चेयरमैन रतन जालान ने विषय प्रवेश कराया, सशंकित सदस्यों ने सवालों की बौछार कर दी. खास कर गौशाला की जमीन बेचे जाने पर कई सवाल उठाये गए. सदस्यों ने जानना चाहिए के आखिर गौशाला की जमीन सस्ती दर पर क्यों बेची गयी. आखिर किस मजबूरी के तहत जमीन बेची गयी. जमीन बेची गयी, तो आम सदस्यों से राय-मशविरा क्यों नहीं किया गया. कुछ इसी तरह के सवाल सदस्य उठाते रहे. फिर 135 सदस्यों की सदस्यता का भी मामला उठा. तय हुआ कि आपस मिलजुल कर हर मामले को सुलझा लिया जाएगा.

प्रेम मित्तल ने पूछा- क्यों बेची गौशाला की जमीन

सभा शुरू होते ही सबसे पहले प्रदीप मित्तल ने बाढ़ू, बुकरू स्थित गौशाला की जमीन बिक्री का मामला उठाया. इस पर चेयरमैन रतन जालान ने कहा कि गौशाला के नाम पर यह भूमि 1962 में खरीदी गयी थी, न तो उसपर गौशाला का कब्जा था और न ही पुख्ता कागजात थे. इस कारण जमीन बेच दी गयी.

पुराने अनुबंध के तय पैसों पर कैसे बेची गई जमीन?

सदस्यों ने सवाल उठाये कि 1914 में भूमि का एग्रीमेंट किया गया था और रजिस्ट्री 2021 में की गयी. सात साल में जमीन का भाव कई गुणा बढ़ जाता है. फिर पुराने अनुबंध के तय पैसों पर भूमि कैसे हस्तांतरित की गयी. इस पर रतन जालान ने बताया कि विवादित जमीन का कोई खरीदार नहीं मिल रहा था, इस कारण एग्रीमेंट की अवधि उसी तय मूल्य पर बढ़ायी गयी थी. जब भूमि बिक्री का पैसा आया था, तो गौशाला में डूबा धन मिलने की खुशी में मिठाइयां बांटी गयी थीं.

पुनीत बिफरे- बोले आपके स्टाफ नहीं हैं कि खाता-बही ढोते रहेंगे

चेयरमैन ने गौशाला की अन्य जमीनों में आ रही दिक्कतों के बारे में भी सदस्यों को जानकारी दी. साथ ही सदस्यों से सहयोग की अपील भी की. इतना सुनते ही एक सदस्य ने कागजात दिखाने की मांग कर दी, इस पर पुनीत पोद्दार विफर गये. कहा कि आपके स्टाफ नहीं हैं कि खाता-बही ढोते रहेंगे. इसी दौरान कमल सिंघानिया ने सवाल उठाया कि न्यास के संविधान के अनुसार गौशाला की भूमि ट्रस्ट से जुड़ा कोई व्यक्ति नहीं खरीद सकता, फिर जिसे जमीन बेची गयी उसे ही ट्रस्टी कैसे बना दिया? उन्होंने यह भी बताया कि जमीन का एग्रीमेंट सबसे पहले मेरे पिता जी ने किया था, पर उस समय जमीन नहीं बेचे जाने की बात कह कर उन्हें जमीन नहीं दी गयी. कहा गया कि भविष्य में जब भी इसकी बिक्री की जाएगी, तो आपको या आपके परिवार को पहला मौका दिया जाएगा. कमल ने कहा कि बावजूद ऐसा नहीं हुआ, इस संबंध में मैने ट्रस्ट को पत्र लिखा है. इसपर पुनीत पोद्दार ने कहा कि पत्र दिखाइए। हलांकि हल्की नोंक-झोंक के बाद दोनों शांत हो गए.

सुरेश बोले- पदाधिकारी हैं तो कागजात लेकर आते

जमीन खरीद-बिक्री के मामले को लेकर सुरेश अग्रवाल ने भी जमकर तकरार की. उन्होंने पुनीत पोद्दार की बातों का प्रतिकार करते हुए कहा- कहते हैं नौकर नहीं है. पदाधिकारी हैं तो कागजात लेकर आना चाहिए, संबंधित जानकारी देनी चाहिए. सब गड़बड़ घोटाला है.

बाजार में छीछालेदर करने-कराने से बाज आयें

बहस, नोंक-झोंक के बीच सूर्यनारायण राजगढ़िया, पवन बजाज, केके पोद्दार,आरके चौधरी, समिति के उपाध्यक्ष प्रेम अग्रवाल आदि ने भी कहा कि गौशाला सामाजिक संस्था है. इसे बाजार में छीछालेदर करने से बाज आयें. मिलजुल कर काम करें, इसी में सबकी महानता है. एकजुटता बनाये रखें, कोई भी समस्या है, तो उसे अपने बीच ही सुलझाने का प्रयास करें.

अंत में कृष्ण गोपालका कागजात के साथ पहुंचे

दोपहर डेढ़ बजे जैसे ही सभा का समापन हुआ, कृष्ण गोपालका कागजात के साथ पहुंचे और न्यास समिति के पदाधिकारियों पर आरोप लगाते हुए कहा कि जमीन का एग्रीमेंट उनके साथ किया गया था, बाद में जमीन दूसरे को बेच दी गयी. यह कहां का इंसाफ है. ट्रस्टियों और पदाधिकारियों को नोटिस भी भेजा है, पर जवाब नहीं दिया गया. लोगों ने उन्हें समझा-बुझा कर वापस भेज दिया.

कुछ ने सराहा, कुछ ने खरी-खोटी सुनायी

चेयरमैन रतन जालान, अध्यक्ष पुनीत पोद्दार, सचिव प्रदीप राजगढ़िया, कोषाध्यक्ष दीपक पोद्दार, उपाध्यक्ष प्रेम अग्रलाल आदि ने मंच साझा किया. चेयरमैन, अध्यक्ष,कोषाध्यक्ष ने अपनी बात रखी व लोगों की सुनी भी. कुछ ने समर्थन कर इनके कार्यों की सराहना की, तो कई ने खरी-खोटी सुनायी.

गौशाला न्यास के इतिहास में ऐसा हुआ न था

गौशाला न्यास के इतिहास में पहले ऐसा हुआ न था, जब दो-दो बार चुनाव तिथि की घोषणा के बावजूद चुनाव न कराया जा सका हो. चार फरवरी को चुनाव कराया जाना था, पर 135 सदस्यों की सदस्यता को लेकर उठे विवाद के कारण इसे रद्द करना पड़ा. फिर 28 फरवरी को चुनाव कराने की घोषणा की गयी थी, लेकिन यह भी सदस्यका के मुद्दे का भेंट चढ़ गया.

ललित पोद्दार ने दो-दो संविधान का मामला उठाया

ललित पोद्दार ने आम सभा में दो-दो संविधान चलाने और 135 सदस्यों की सदस्यता का ममला उठाया. कहा कि जब 2011 में संविधान बना, तो पहले वाला वैसे ही निरस्त हो जाता है. लोग कोर्ट और सरकारी महकमें में जाने की बात को लेकर विफर रहे हैं. सदस्यता रद्द करने की बात कर रहे हैं. क्या मैं समाज के बाहर का हूं. कई संगठनों का कार्यभार भी मेरे कंधे पर है.

लांक्षन न लगाइये, जो हुआ भूल जाइए : रतन

चेयरमैन रतन जालान ने भी करारा जवाब दिया. कहा कि आप भी कार्यकारिणी से जुड़े रहे हैं. पहले इस मुद्दों को क्यों नहीं उठाया. ललित के फोन करने की बात और पत्र देने की बात को खरिज करते हुए रतन ने लांक्षन न लगाने की बात कही. कहा कि यदि सही तरीके से आते तो बैठकर बात हो जाती. गो सेवा आयोग में बुजुर्गों को लेकर गये. पांच घंटा बर्बाद हुआ. जो हुआ उसे भूल जाइए. आइए आगे.

गलतियां जल्द सुधारेंगे मिलजुल कर करेंगे काम

पुरानी गलतियों को सुधार कर आगे गोवंश संवर्धन के लिए बेहतर काम करेंगे. जो भी फैसले लिए जायेंगे, वे आम सहमति बना कर ही लिए जायेंगे.15 दिनों के अंदर सदस्यों की सदस्यता का मामला भी सुलझा लिया जाएगा. कहीं कोई गलत काम नहीं हुआ है. यदि किसी को लगता है, तो आकर बात करें, मिल-बैठकर शंका का समाधान करेंगे. उन्होंने कहा कि गौशाला का पैसा खाना, गो मांस खाने जैसा है. हमारा समाज इतना गिरा नहीं कि कोई ऐसा करेगा.

महिला पारा टीचर से एक लाख रुपये की छिनतई

संवाददाता। रांची

बाइक सवार अपराधियों ने महिला पारा टीचर से एक लाख रुपए की छिनतई की घटना को अंजाम दिया है. घटना बुधवार को जिले के रातू थाना क्षेत्र के फुटकलटोली के पास हुई, जहां हेहल जामुनटोली की रहने वाली पारा टीचर मीना तिर्की थैले में एक लाख रुपए लेकर जा रही थी. इसी दौरान रास्ते में बाइकसवार दो युवकों ने झपट्टा मारकर उनका थैला लेकर फरार हो गए.

घर बनवाने के लिए रुपये बैंक से निकाल कर जा रही थी : मीना तिर्की बिजुलिया स्कूल में पारा टीचर हैं. घर बनाने के लिए बुधवार को अपने पति सोहराई उरांव के साथ बैंक ऑफ इंडिया रातू चट्टी ब्रांच गई थीं. बैंक से एक लाख रुपए निकाले और थैले में लेकर अपने घर जा रहीं थीं. इसी दौरान बाइक सवार अपराधियों ने यह घटना को अंजाम दिया.

समस्तीपुर में रिलायंस ज्वेलर्स में 2 करोड़ की लूट

संवाददाता। समस्तीपुर

बिहार में समस्तीपुर शहर के मोहनपुर रोड स्थित रिलायंस ज्वेलर्स में बुधवार की रात हथियारबंद अपराधियों ने डकैती की बड़ी वारदात को अंजाम दिया. रात करीब आठ से नौ बजे के बीच जब शटर गिराए जाने की तैयारी चल रही थी, एक-एक कर कई डकैत अंदर घुसे और हथियार के बल पर करीब डेढ़ से दो करोड़ रुपये की ज्वेलरी लेकर हथियार लहराते हुए निकल गए. अपराधियों ने पहले से रेकी कर रखी थी और शटर गिराए जाने के समय के हिसाब से पहुंचे थे. पूरी वारदात को शटर गिराकर अंजाम दिया गया और फिर अपराधी रिलायंस कर्मियों को हथियार के बल पर अंदर रहने की ताकीद करते हुए निकल गए. घटना की सूचना से पुलिस भी परेशान है. पुलिस टीम मौके पर पहुंच चुकी है और फिंगर प्रिंट के साथ सीसीटीवी फुटेज जुटाया जा रहा है. घटना के संबंध में बताया गया है कि रात करीब 9 बजे शोरूम बंद होता है. हर दिन की तरह बुधवार रात भी इसकी तैयारी चल रही थी. इसी दौरान पहले ग्राहक की तरह दो बदमाश अंदर घुसे. उनके पीछे-पीछे एक-एक कर चार अन्य अपराधी भी अंदर घुस गए और घटना को अंजाम दिया.

जोहार ! महामहिम

रांची एयरपोर्ट पर राष्ट्रपति का स्वागत करते राज्यपाल व मुख्यमंत्री.

प्रमोटी अफसर संभाल रहे 12 जिले

सौरभ सिंह। रांची

झारखंड के 24 जिलों में पुलिस के लिए अलग-अलग तरह की चुनौतियां रहती हैं. पुलिस को कानून व्यवस्था से लेकर वीआईपी ड्यूटी और ट्रैफिक व्यवस्था की जिम्मेदारी संभालनी होती है. जाहिर है कि ऐसी विशेष परिस्थितियों वाले राज्य में पुलिसिंग काफी कठिन होता है. ऐसे में झारखंड सरकार का स्टेट पुलिस सर्विस के अफसरों पर भरोसा बढ़ा है. राज्य में 24 जिलों में से 12 जिलों की कमान प्रमोटी आईपीएस अधिकारियों के हाथ में है. वर्तमान में झारखंड पुलिस में डायरेक्ट आईपीएस के कुल 42 एसपी रैंक के अधिकारी है. वहीं स्टेट पुलिस सर्विस के 29 अधिकारी एसपी रैंक है.

डायरेक्ट आईपीएस के कुल 42 एसपी रैंक के अधिकारी हैं

प्रमोटी आईपीएस अधिकारियों के पास 12 जिलों की जिम्मेदारी है. इनमें रांची, गुमला, चतरा, हजारीबाग, गिरिडीह, कोडरमा, रामगढ़, गढ़वा, जामताड़ा, सरायकेला, देवघर और दुमका जिला शामिल है. इसके अलावा रांची और धनबाद में सिटी एसपी की भी जिम्मेदारी प्रमोटी आईपीएस अधिकारियों को मिली है.

इन जिलों की जिम्मेदारी डायरेक्ट आईपीएस के जिम्मे : डायरेक्ट आईपीएस अफसर के जिम्मे भी 12 जिलों की कमान है. इनमें धनबाद, जमशेदपुर, खूंटी, सिमडेगा, लोहरदगा, पाकुड, गोड्डा, पलामू, लातेहार, बोकारो, चाईबासा और साहिबगंज शामिल हैं.

राजधानी रांची में गहराने लगा है जल संकट

बसंत मुंडा। रांची

राजधानी रांची में पेयजल की समस्या गहराती जा रही है. जैसे जैसे शहर में गर्मी बढ़ रही है, वैसे-वैसे पानी की समस्या भी बढ़ती जा रही है. शहर के एदलहातू, सिंदवारटोली, पहाड़ी मंदिर, टैगोर हिल में बोरिंग और कुओं की हालत काफी खराब हो गई है. 500 की आबादी वाले ललित कॉलोनी में भी गर्मी में कुएं और बोरिंग बहुत ही कम मात्रा में पानी मिल पा रहा है.

ग्रामीण सरस्वती देवी ने कहा कि 10 साल पहले इस स्थान पर पानी की कोई समस्या नही होती थी.आस पास के तालाब में पानी भी रहता था. डीप बोरिंग होने के कारण कुएं का पानी पहले सूखने लगता है और धीरे-धीरे हालत गंभीर हो जाती है.

युवा राजा उरांव ने कहा कि कॉलोनी में पानी का स्तर तेजी से कम हो रहा है. कॉलोनी में सप्लाई पानी के लिए पाइप बिछाने के लिए गड्ढा खोदा गया है, लेकिन अभी तक सप्लाई पानी घर तक नही पहुंच है.

महावीर सिंह ने कहा कि परिवार में आठ सदस्य है. गर्मी पहुंचते ही पानी के लिए रात दिन एक करना पड़ता है. घर में हर दिन आटो से दो ड्रम में पानी लाते हैं. एक बार में 400 लीटर पानी एक किमी दूर से भरकर लाते है. तभी घर का काम काज शुरू होता है.

अशोक उरांव ने कहा कि मुहल्ले में शादी विवाह होता है. तब पानी की समस्या और बढ़ जाती है. प्यास बुझाने के लिए जारवाला पानी खरीदना पड़ता है.

शुभम संदेश खास बातचीत

क्लाइमेट चेंज में कमी लाने के लिए लोकल स्तर पर जागरूकता जरूरी

मेकॉन के चीफ जनरल मैनेजर डॉ. शुभाशीष चक्रवर्ती अपने 37 वर्षों के लंबे कार्यकाल के बाद 29 फरवरी को सेवानिवृत्त हो रहे हैं. बातचीत के दौरान उन्होंने कई विषयों पर बेबाकी से राय रखी. प्रस्तुत है हमारे संवाददाता पियूष गौतम से हुई खास बातचीत के अंश...

वर्ष 1986 से 2024 तक के कार्यकाल का अनुभव कैसा रहा?

-मैंने बीआईटी मेसरा से मेकैनिकल इंजीनियरिंग की. इंजीनियरिंग स्टूडेन्ट का ख्वाब होता है कि वह किसी अच्छी कंपनी में काम करे. कार बनाने वाली उस समय की बड़ी कंपनी हिन्दुस्तान मोटर्स से मैंने करियर की शुरुआत की. इसके बाद मेकॉन कंपनी में मेरा चयन हुआ. पर्यावरण विभाग में असिस्टेंट डिजाइन इंजीनियर के रूप में मैंने शुरुआत की. वहां मैंने बहुत कुछ सीखा. इसी विभाग से आज मैं चीफ जनरल मैनेजर के रूप में सेवानिवृत्त हो रहा हूं. कार्यकाल के दौरान विभिन्न विभागों में मुझे कार्य करने का अवसर मिला. इसी दौरान मुझे एचईसी में मार्केटिंग डायरेक्टर की जिम्मेदारी सौंपी गई, जिसमें काम करके मुझे बहुत मजा आया. इस दौरान हमारी टीम कई चुनौतियों के बीच एचईसी में अधिकतम ऑर्डर लेकर आई. एचईसी एक मदर इंडस्ट्री है, इसमें नट-बोल्ट से लेकर इसरो के लॉन्चिंग पैड तक बनाए जाते हैं. इसी बीच मुझे एचईसी में डायरेक्टर (प्रोडक्शन) की भी जिम्मेदारी दी गई. फिलहाल एचईसी की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है, लेकिन मैं मानता हूं कि आने वाले समय में एचईसी अपने पुराने ट्रैक पर आ जाएगा. समय के चक्र में उतार-चढ़ाव आते रहता है. मैंने पांच साल का कार्यकाल पूरा करने के बाद मेकॉन में चीफ जनरल इंजीनियर (पर्यावरण) पद की जिम्मेदारी संभाली.

पर्यावरण इंजीनियरिंग में आपकी रुचि कैसे हुई?

-मेकैनिकल इंजीनियरिंग पूरा करने के बाद मेरी पोस्टिंग पर्यावरण इंजीनियरिंग विभाग में हुई. उस समय यह एक नई फिल्ड थी. उस दौरान प्रदूषण नियंत्रण के लिए नए-नए नीति-नियम बनने लगे थे. हमने कार्बन डेवलपमेंट मैनेजमेंट (कार्बन क्रेडिट) पर काम किया. इसके बाद हमारे सभी पलांट जहां-जहां प्रदूषण हो रहे थे, वहां हमने प्रदूषण नियंत्रण उपायों पर काम किया. यह जॉब चैलेंजिंग होने के साथ-साथ बेहद संतोषपूर्ण रहा.

एचईसी में आपकी क्या उपलब्धि रही?

डायरेक्टर मार्केटिंग के तौर पर मैं और मेरी टीम अधिकतम वर्क आर्डर ला सकी. इस दौरान कई उपकरण डेवलप किये गये. इसरो की परियोजनाओं को पूरा किया गया. परियोजना में रुकावट या काम बाधित न हो, इसके लिए काम के दौरान इंजीनियर्स और मजदूर काफी सतर्क रहते थे और काम को माइक्रोन में अंजाम दिया जाता था. वहीं पहले विदेशों से पुली आयात किए जाते थे, लेकिन एचईसी में पुली का निर्माण शुरू हुआ. इसरो के लिए मोबाइल लॉन्च पैड स्टेशन, क्रेन, प्लेटफॉर्म बनाए गए, यह सब स्टेट ऑफ द आर्ट मैन्यूफैक्चरिंग था.

मेकॉन में अपकी क्या उपलब्धि रही?

-एनवायर्नमेंटल इंजीनियरिंग एक बहुत ही चैलेंचिंग विषय है. इस विषय में हर एक दिन एक नई कॉन्सेप्ट जुड़ती है. हमारी टीम ने प्रदूषण के रोक-थाम पर कई महत्वपूर्ण कार्य किए. नए-नए उपकरणों का डिजाइन, डेवलपमेंट से लेकर सफल क्रियान्वयन किया. कार्बन फुटप्रिंट पर काम किया जो बहुत ही चुनौतीपूर्ण रहा. हमारे पर्यावरणीय विभाग में करीब 400 ईआईएईएमपी (इंपैक्ट असेसमेंट एंड एनवायर्नमेंटल मौनेजमेंट प्लान) रिपोर्ट बना.

सहयोग और टीम वर्क को कैसे अपनाते हैं?

-यही तो मैनेजेरियल क्वालिटी होती है. अगर कोई मैनेजर या हेड अपने सहयोगी के साथ मिल-बैठ कर टीम बना सके तो यह उसकी सबसे बड़ी उपलब्धि है. सही जगह पर सही लोगों को लगाना ही मैनेजर का दायित्व है.

क्लाइमेट चेंज की समस्या से कैसे निपटें?

-प्लास्टिक से लेकर प्रदूषण तक, इसका सीधा असर क्लाइमेट चेंज पर पड़ता है. दुनिया के बड़े-बड़े वैश्विक नेता क्लाइमेट चेंज को लेकर कॉप बैठक करते हैं, जिसमें भारत भी हिस्सा लेता है. जो चर्चाएं वैश्विक स्तर पर हो रही हैं, जरूरत है उन चीजों का लोकल स्तर पर परिचर्चा के माध्यम से लोगों में जागरूकता बढ़ाएं.

धनबाद स्टेशन बुकिंग काउंटर में छापा, बिक्री से अधिक मिले रुपये

धनबाद। धनबाद रेलवे स्टेशन के बुकिंग काउंटर में पांच सदस्यीय विजिलेंस टीम ने सुबह में छापेमारी कर टिकट बिक्री में गड़बड़ी का खुलासा किया है. पांच काउंटर पर टिकट बिक्री की गणना किए जाने पर अधिक रकम प्राप्त हुआ. रेलवे सूत्रों के अनुसार विजिलेंस विभाग की टीम मंगलवार रात में होटल में आकर ठहर चुकी थी. सुबह होते ही टिकट घर पहुंची और किनारे के दरवाजे से एक के बाद एक पांच सदस्यीय टीम पहुंच गई. यात्रियों की भीड़ काफी अधिक थी. हर काउंटर पर यात्री ट्रेन छूटने व जल्दी टिकट देने की बात कहकर हंगामा कर रहे थे. सारा नजारा विजिलेंस की टीम देख रही थी. 100, 200 व 500 रुपये देने वाले यात्रियों को 10 से 20 रुपये खुदरा देने में बुकिंग क्लर्क आनाकानी कर रहे थे. बुकिंग क्लर्क किसी को खुदरा पैसा वापस कर रहे थे, तो अधिकतर को यह कहकर नहीं दे रहे थे कि अभी नहीं है. जांच जारी है.